9-6-67

रिकार्ड: - नयन हीन को राह .... ओम् शान्तिः प्रातः क्लास 9-6-67

बच्चों को नयन मिले है। पहले नयन नही थे। कौनसे नयन? ज्ञान के नयन नही थे। अज्ञान के नयन थे। भक्ति को अज्ञान कहा जाता है। बच्चे जानते है कि सालीग्राम एक ही बाप है। और कोई मे यह रुहानी ज्ञान है ही नही। जिस ज्ञान से सदगति हो। अथवा शान्तिः धाम सुखधाम वापस जाना हो। अब तुम बच्चों को दृष्टी मिली है। सुखधाम बदल कर फिर माया का देश बनता है तो फिर दुःखी होकर पुकारते है कि नयन हीन को राह बताओ। भक्ति मार्ग के यज्ञ तप दान पुण्य आद से कोई राह नही मिलती है। शान्तिः धाम सुखधाम जाने की। हर एक को अपना पार्ट बजाना ही है। बाप कहते है मुझे भी पार्ट मिला हुआ है। भक्ति मार्ग मे पुकारते है मुक्ति जीवन मुक्ति की राह बताओ। इसके लिये कितने यज्ञ तप दान पुण्य आद करते है। कितना भटकते है। शान्तधाम सुखधाम मे भटकना होता ही नही। यह भी तुम्ही जानते हो। वो तो सिर्फ शास्त्रो की पढाई और जिस्मानी पढाई को ही जानते है। इस रुहानी बाप को तो बिलकुल ही जानते नही है। रुहानी बाप ज्ञान तब आकर देते है जब कि सर्व की सदगति होती है। पुरानी दुनियां बदलती है। मनुष्य देवता बनते है। फिर सारी दुनियां पर एक ही राज्य, देवी देवताओं का होता है। जिनको ही स्वर्ग कहते है। यह भी भारतवासी ही जानते है आदी सनातन देवी देवता धर्म भारत मे ही था। उस समय और कोई धर्म नही था। भारत ही पारस बुधी था। अभी भारत पत्थर बुधी है। तुम बच्चो के लिये अभी है संगम युग बाकी सब है कलयुग में। तुम पुरुषोतम संगम युग मे बैठे हो। जो-2 बाप को याद करते है बाप की श्रीमत पर चलते है वो संगम युग पर है। बाकी कलयुग मे है पत्थर बुधी। दिन प्रति दिन पत्थर बुधी ही होते जाते है। अभी कोई सावरन्टी किंगड़म तो है नही। कौरव राज्य का अर्थ ही है प्रजा का प्रजा पर राज्य। कोई भी बडी आथारटी की आथारटी पसन्द नही आती है तो पंच आपस मे मिल कर उसको नापास कर देते है। यह है ही पांचायती राज्य। इरीलीजस, अनराईटियस। इनको कहा जाता है कौरव राज्य। लोक सभा, राज्य सभा जो भी है यह है पंचायती। अनेक मत से राज्य चलता है। सतुयग मे तो एक बाद-शाह की ही मत चलती है। बजीर भी नही होते है। इतनी ताकत रहती है। फिर जब पतित बनते है तो वो वजीर आद रखते है क्योकि पतित बन जाते है तो ताकत नही रहती है। अब तो है ही प्रजा का राज्य। सतयुग मे एक राज्य होने कारण ताकत रहती है। अभी तो वो ताकत ले रहे हो। 21 जन्मो लिये इनडिपेंण्डिड़ बन कर राजाई करेंगें। अपनी ही दैवी फैमली है। अब यह है तुम्हारा ईश्वरिय परिवार। बाप कहते है कि अपने को आत्मा समझ बाप की याद मे ही रहते हो तो तुम ईश्वरिय परिवार के हो। अगर देहअभिमान मे आकर भूल जाते हो तो आसुरी परिवार के हो। एक सैकिंड मे ईश्वरिय फिर ऐक सेकिंड़ मे आसुरी सम्प्रदाय के बन जाते हो। अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करना कितना सहज है। बच्चो को अति मुशकल लगता है। बाप कहते है अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करेंगें तो विकर्म विनाश होगें। देह दवारा कर्म तो करना ही है। देह बिना तो कर्म कर नही सकेंगें। कोशिश करनी है कि कामकाज करते हुये भी हम अपने बाप को याद कर सकें। परन्तु यहां तो बिना काम भी याद नही कर सकते है। भूल जाते है। यही मेहनत है। भक्ति मे कोई यह थोडेई कहा जाता है कि सारा दिन बैठ कर भक्ति करो। उसमे तो समय होता है। सवेर वा शाम को वा रात को। फिर मन्त्र आद जो बुधी मे रहता है वो फिराते है। अनेकानेक शास्त्र है जो भक्ति मार्ग मे पढ़ते है। तुमको तो कोई पुस्तक आद नही पड़नी है। ना बनानी है। यह छपवाते भी है थोडा रिफ्रैश होने के लिये। बाकी कोई भी किताब आद नही रहेगा। यह सब खत्म हो जाना है। पुस्तक माना ही भक्ति। यह सब है कर्ममाण्ड के। उसको अज्ञान वा भक्ति कहा जाता है। भक्ति है ही अज्ञान। ज्ञान तो है ही एक मे। अभी देखो वहां ज्ञान-विज्ञान भवन नाम रख दिया है। जैसे कि वहां योग और ज्ञान सिखाया जाता हो। बिगर अर्थ ऐसे-2 नाम रख देते है। पत्थर बुधी है नां। कुछ भी पता नही है कि ज्ञान क्या है और विज्ञान क्या है। अभी तुम जानते हो कि ज्ञान ज्ञान है। और अज्ञान है भक्ति। योग से

योग से होती है हैल्थ। जिसकों ही विज्ञान कहा जावे। और यह है ज्ञान। जिसमे वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी समझाई जाती है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी कैस रिपीट होती है वो अब जानना है। परन्तु वो पढाई तो है हद की। यहां पर तो तुमको बेहद की हिस्ट्री जाग्राफी बुधी मे है कि हम 84 जन्म कैसे लेते है। कितना समय और कब राज्य करते थे। कैस राजधानी मिली थी। यह बाते और कोई की बुधी मे नही है। यह सृष्टी का चक्र कैसे फिरता है वाप ही वताते है। सारी दुनियां इस चक्र मे आती है। इससे कोई एक भी छूट नही सकते। यह तो गपोडे मारते है जो कहते है कि फालाना निर्वाणधाम गया। वां ज्योति ज्योत समाया। वाप समझाते है कि मनुष्य की आत्मा एक शरीर छोड़ कर दुसरा लेती है। कितना वडा ड्रामा है। सव मे आत्मा है। इस आत्मा मे अविनाशी पार्ट भरा हुआ है। इनको कहा जाता है वनी वनाई। अब ड्रामा कहते है तो जरर उनका समय भी होना चाहिये। बाप अव समझाते है कि यह ड्रामा 5000 वर्ष का है। भक्ति मार्ग के शास्त्रो मे लिरव दिया है कि ड्रामा 5000 वर्ष का है। इस समय ही जवकि बाप आये थे तो राजयोग सिरवाया था। इस समय का ही गायन है कि कौरव सव घोर अन्धेर में थे। और पाण्डव सोजेर मे थे। वो लोग समझते है कि कलयुग तो अभी हजारो वर्ष का है। उनको भी पता नही पड़ता है कि भगवान आया हुआ है। इस पुरानी दुनियां का मौत सामेन रवडा है। सब अज्ञान नींद में सोये पडे है। जब अन्त की लडाई देखेंगें तो कहेंगे कि यह तो वो ही महाभारत की लडाई है। आगे जब लडाई लगी थी तो भीऐस ही कहा था। यह रिर्हसल होती रहगी। फिर चलते-2 वन्द हो जावेगी। तुम जानते हो अभी हमारी राजधानी स्थापन हुई थोडेई है। गीता मे यह थोडेई लीवा है कि वाप ने राजयोग सिरवाया और यहां ही राजधानी स्थापन की। गीता मे तो प्रलय दिरवा दी है। दिरवाते है कि और तो सब भर जाते है बाकी पांच पाण्डव बचते है फिर वो भी पहाडो पर गल मरते है। राजयोग से क्या हुआ वो कुछ भी पता नही है। बाप हर एक बात समझाते रहते है। वो है हद का बाप। हद का ब्रहमा। रचता है। पालना भी करते है। बाकी प्रलय नही करते है। स्त्री को ऐडाप्ट करते है। बाप भी आकर ऐडाप्ट करते है। कहते है कि मै इनमे प्रवेश कर कर वच्चो को नालेज सुनाता हूं। इन दवारा बच्चों को रचता हूं। बाप भी है फैमली भी है। यह बाते बडी गुहय है। वहुत गंभीर बाते है। मुशकल कोई की बुधी मे बैठती है। अब बाप कहते है पहले-2 तो अपने को आत्मा समझो। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दुसरा लेती है। शरीर पर ही भिन्न-2 नाम पड़ते है। नाम रुप फीचंस यव भिन्न-2 है। एक के फीचर दुसरे से नां मिले। हर एक आत्मा के जन्मजन्मांतर के अपना फीचंस अपनी ऐक्ट ड्रामा मे नूंधी हुई है। इसलिय उनको वना बनाया ड्रामा कहा जाता है। अब बेहद का बाप कहते है मुझे याद करो तो विर्कम विनाश हो। तो हम क्यो नही वाप को याद करे। यही मेहनत की वात है। इसमे ही सुख है। याद की यात्रा मे ही माया के वहुत तूफान आते है। वार-2 याद को तोड़ देगी। सकंल्प विर्कलप ऐसे-2 आवेंगें जो कि एकदम माथा खराब कर देंगें। इसमे घवराना नही है। बाप ने समझाया है तुम्हे कि इल ल-न कीर्कमइन्द्रिया वश मे कैसे हुई। यह सर्म्पूण निरविकारी थे यह शिक्षा उनको कहां से मिली। अभी तुम बच्चो को यही बनने की शिक्षा मिल रही है। उन्होमे कोई विकार नही होता। वहां रावण राज्य ही नही। पीछे रावण का राज्य होता है। रावण क्या चीज है। यह एक भी पण्डित विदवान आद नही जानते है। ड्रामा अनुसार यह भी नूंध है। ड्रामा की आदि मध्य अन्त को नही जानते। इसलिय ही नेति-2 कहते है। अभी तुम स्वर्गवासी बनने लिय पुर्षार्थ कर रहे हो। यह लनन स्वर्गवासी है नां। उनके आगे माथा टेकने वाले तमोप्रधान कनिष्ट पुरुष है। बाप कहते है पहले-2 तो एक बात पक्की कर लो। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। इसमे ही मेहनत है। जैसे 8 घण्टा सरकारी नौकरी होती है नां। अभी तुम बेहद की सरकार के मददगार हो। तुमको कम से कम आठ घण्टा पुर्षार्थ करके याद मे ... पक्की हो जावेगी जो कोई की भी याद नही आवेगी। बाप की

9-6-67

याद मे ही शरीर छोडेंगे। फिर वैा ही विजय माला के दाने बनेंगे। एक राजा को प्रजा कितनी ढेर होती है। यहां भी प्रजा बननी है नां। तुम विजय माला के दाने पुजन लायक बनेंगे। 16108की माला भी होती है। एक बडे-2 बाक्स मे पडी रहती है। 8की भी माला होती है। , 108की भी माला होती है। अन्त मे फिर 1600की भी बनती है। तुम बच्चो ने ही बाप से राजयेाग सीख सारे विश्व को स्वर्ग बनाया। इसलिय ही तुमको पुजा जाता है। तुम ही पुज्य थे फिर पुजारी बने हेा। यह दादा कहते है हमेन भी वेा माला पैरी हॉल-न के मन्दिर मे। यों तो रुद्र के मन्दिर मे भी माला होनी चाहिये। तुम पहले रुद्र माला फिर रुण्ड माला बनते हेा। पहले नम्बर मे है रुद्र माला। उसमे शिव बाबा भी है। रुण्ड माला मे शिव कहां सें आया। वेा है विष्णु की माला। वेा है शिव की माला। उन बातेा को भी कोई समझते थेाडेई है। अभी तुम कहते हो हम जाते है शिव बाबा के गले का हार जाकर बनते है। ब्राहम्णेा की माला नही बन सकती। ब्राहम्णेा की माला होती ही नही है। तुम जितना याद मेरहते हेातो गोया पास रहते हो। फिर वहां भी पासही मे आकर राज्य करेंगे। यह पढाई ओर किसी जगह मिल नही सके। बाप बच्चो को पढा रेह है। कृष्ण को कोई बाप थेाडेई कहेंगे। वेा तो खुद ही बच्चा है। शादी की फिर राज्य किया। वेा फिर पढा कैस सकेंगे। कितनी भारी भूलहुई। इस भूल कोतुम समझते हेा। तुम जानते हेाकि अभी हम इस पुराने शरीर को छोड कर स्वर्गवासी बनेंगे। सारा भारत स्वर्गवासी बनेगा। भारत इनपरटीक्यूलर, भारत ह स्वर्ग था। 5000र्वष की बात है। लाख र्वष की बात हेा ही नही सकती है। शास्त्रो मे लाखो र्वष लगा देने से कह देते है कि यह 50हजार र्वष की पुरानी चीज है। यह लाखो र्वष की पुरानी चीज है। यह तो हेा नही सकता। देवताओं को ह 5000र्वष हुये है। स्वर्ग को ही मनुष्य भूल गये है। तो ऐसे ही दुक्का लगा देते है। बाकी है कुछ भी नही। इतना पुराना सम्वंत आद है थेाडेई। है ही सूर्यवंशी चन्द्रवंशी फिर बाद मे और र्धम वाले आते है। पुरानी चीज क्या काम की कितना खरीद करते है। पुरानी चीज को बहुत वेल्युबुल समझते है। सबेस वेल्युबुल है शिव बाबा। यूं तो लिंग बहुत ले आते है। कोई-2 पत्थर ऐस घिस कर आते है उनमे भी सोना रहता है। उसको शिवलिंग कह देते है। कितेन शिवलिंग मन्दिरो मे जाकर इकठे करते है। आत्मा इतनी छोटी बिन्दी है। यह किसीको भी समझमे नही आता है। अति सूक्ष्म रुप है। बाप भी समझाते है इतनी छोटी बिन्दी मे अपना-2 र्पाट भरा हुआ है। यह ड्रामा रिपीट होता रहता है। यहज्ञान तुमको वहां नही रेहगा। यह प्रायः लुप्त हेा जाता है। तेा फिर कोई सहज राजयेाग सिखा ही केा सकते है। यह सब भक्ति र्माग के लिय बैठ बनाया है। अभी बच्चे जानते है बाप दवारा ब्राहम्ण देवता क्षत्री तीन र्धम स्थापन हो रहे है। भविष्य नई दुनियां के लिये। वेा पढाई जो तुम पढ़ते हेा वेा है इस दुनियां के लिय। इस जन्म लिय। इनकी प्रारब्ध तुमको नई दुनियां में मिलगी। यह पढाई होती ही है संगम युग पर। यह है पुरषोतम संगम युग। कनिष्ट मनुष्य इन देवताओं को जाकर माथा टेकते है। मानुष से देवता तो जरुर संगम पर ही बनेंगे नां। बाप बच्चो को सब राज समझाते है। यह भी बाबा जानते है कि तुम सारा दिन इस याद मे रहें ना सकेंगे। इम्पासीबुल है। इसलिय चार्ट रखना है कि देखें कि हम कहां तक याद मे रहे सकते है। दहअभिमानी होगा तो याद मे कैसे रेह सकेंगे। पापों का बोझा सिर पर बहुत है। इसलिय बाप कहते है कि याद मे रहो। त्रिमूर्ती शिव का चित्र पाकेट मे ड़ाल दो। परन्तु तुम बार-2 भूल जाते हेा। त्रिमूर्ती के चित्र मे सारा ज्ञान आ जाता है। अल्फ को याद करने से बे, ते सब आ जाता है। बेज़ तो हमेशा पडा ह ही रहे। कोई भी अच्छा आदमी हेा तेा उनको देना चाहिये। अच्छा आदमी तो बिना पैसेा के लेगा नही। बोले इसके क्या पैस है? बोलो गरीबों को तो यह बिना पैस दिये जाते है। बाकी जो जितना देवें। शाहुकार लोग पेस देते है तो उससे फिर गरीबों के लिय ओर बना लेते है। प्रर्दशनी मे भी तुमको बेज़ रखते रहना चाहिये। ओम